अखिल भारतीय शास्त्रोत्सव : एक गरिमामय समापन समारोह

21-03-2025

अखिल भारतीय शास्त्रोत्सव के 62वें संस्करण का भव्य समापन समारोह सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में अनेक गणमान्य अतिथियों, संस्कृत विद्वानों, शिक्षाविदों एवं प्रतिभागियों ने अपनी भव्य उपस्थिति से इसे गरिमा प्रदान की।

मुख्य अतिथि का उद्बोधन

उत्तराखंड राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। उन्होंने अपने उद्बोधन में बताया कि उत्तराखंड देश का पहला राज्य है जिसने संस्कृत को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया है। उन्होंने कहा कि संस्कृत ग्राम योजना के अंतर्गत राज्य सरकार संस्कृत के प्रचार-प्रसार हेतु निरंतर कार्य कर रही है तथा इसे व्यवहार में लाने के लिए कटिबद्ध है।

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय एवं देवभूमि की महत्ता

हरिद्वार के सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि पहली बार तीन संस्कृत विश्वविद्यालयों को केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया है। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड, जिसे देवभूमि कहा जाता है, संस्कृत को समर्पित प्रदेश के रूप में विकसित हो रहा है।

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. श्रीनिवास वरखेडी जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि वर्तमान समय में संस्कृत प्रेमी प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री के नेतृत्व में संस्कृत का भविष्य उज्ज्वल है। उन्होंने इस वर्ष शास्त्रोत्सव का आयोजन मायापुरी (हरिद्वार) में करने पर प्रसन्नता व्यक्त की एवं घोषणा की कि अगले वर्ष इसका आयोजन दक्षिण भारत के कांचीपुरम में किया जाएगा, जो सप्तपुरियों में से एक है।

प्रतियोगिता एवं पुरस्कार वितरण

इस शास्त्रीय प्रतियोगिता में कुल 34 विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। अगले वर्ष से आयुर्वेद शलाका एवं संहिता कंठपाठ प्रतियोगिता को भी सम्मिलित किया जाएगा। पतंजलि विश्वविद्यालय ने इसको प्रायोजित करने की तत्परता जताई। इस अवसर पर शास्त्रोत्सव के प्रधान संयोजक प्रो. मधुकेश्वर भट्ट जी ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं की घोषणा की। मुख्यमंत्री सहित सभी गणमान्य अतिथियों ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त छात्रों को सम्मानित किया।

पुस्तक लोकार्पण एवं विशेष उपहार

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित "शास्त्र पद्धति ग्रंथ" को सभा में उपस्थित सभी विद्वानों एवं प्रतिभागियों को उपहार स्वरूप प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त, प्रो. प्रियव्रत मिश्र द्वारा रचित "साधुशब्दं प्रयुञ्ज्महे" एवं केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (भवभूति परिसर, भोपाल) द्वारा प्रकाशित "भोजराज पंचांग" तथा विश्वविद्यालय की संस्कृत वार्ता पत्रिका का भी लोकार्पण किया गया।

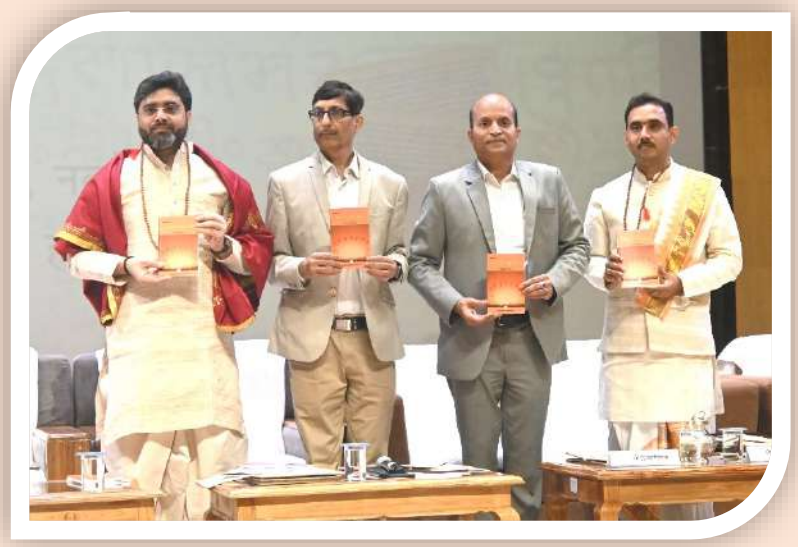

अन्य विशेष आयोजन एवं योगदान

पतंजलि विश्वविद्यालय के योग गुरु बाबा रामदेव जी एवं आचार्य बालकृष्ण जी ने इस आयोजन में विशेष रूप से प्रतिभाग किया एवं सभी प्रतिभागियों को बधाई दी।

कार्यक्रम के दौरान संस्कृत ओलंपियाड एवं गीता ओलंपियाड के विजेताओं को मंचस्थ विद्वानों द्वारा पुरस्कृत किया गया, जिसका संयोजन डा. अमृता कौर जी ने किया।

इस पूरे आयोजन को सफल बनाने में डा. प्रसाद भट्ट, डा. विजय दाधीच, डा. रितेशा, शोध सहायक श्रीश समीर, श्री विनय कुमार शुक्ल, शोधच्छात्र श्री अनिल, श्री चंद्रमोहन, श्री दीपक, डा. रजत गौतम एवं डा. जनार्दन सुबेदी श्री दिनेश रङ्गा श्री संजय मालिक सहित अन्य अनेक विद्वानों एवं कर्मचारियों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

पतंजलि विश्वविद्यालय के डा. साध्वी देवप्रिया, श्री आर्षदेव एवं श्री परमार्थ देव डा. बदरी जी डा. गौतम जी कर्णाटक संस्कृत विश्वविद्यालय की प्रो. शिवानी जी सहित 500 से अधिक विद्वान् एवं स्वयंसेवकों ने इस कार्यक्रम को पूर्ण सफलता प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उत्कृष्ट संचालन एवं काव्यमयी प्रस्तुति

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के युव कुलसचिव प्रो. गायत्री मुरली कृष्ण जी ने सभी का स्वागत किया । प्रो.गणेश ति. पण्डित जी ने सभागार में उपस्थित सभी विद्वानों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इस भव्य समारोह का संचालन डा. पवन व्यास जी ने अत्यंत प्रभावी एवं काव्यमयी शैली में किया। उन्होंने विभिन्न सुभाषितों एवं काव्य रचनाओं के माध्यम से श्रोताओं का ध्यान आकर्षित किया जिससे संपूर्ण वातावरण संस्कृतमय एवं भावपूर्ण बन गया।

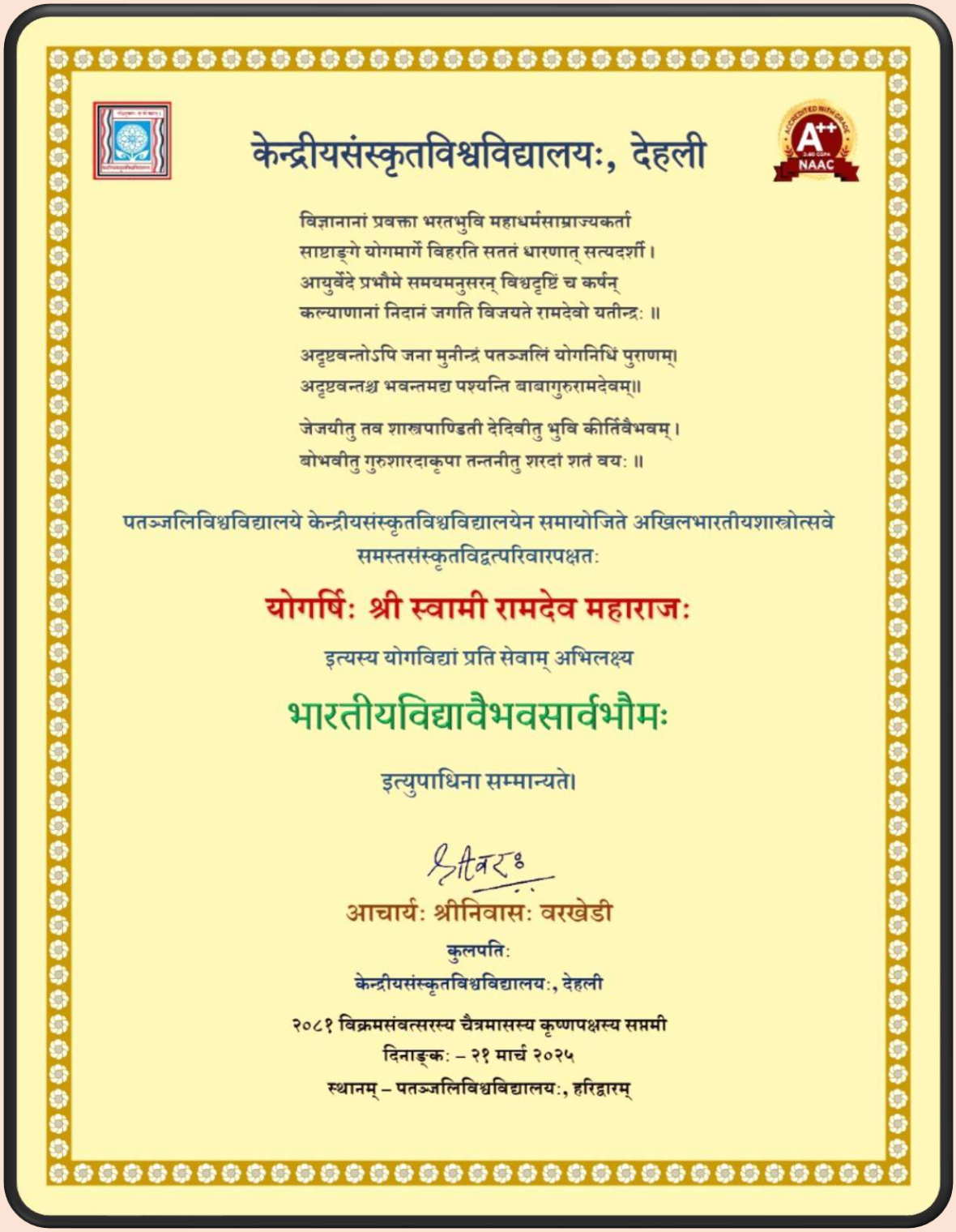

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, देहली

विज्ञानानां प्रवक्ता भरतभुवि महाधर्मसाम्राज्यकर्ता
साष्टाङ्गे योगमार्गे विहरति सततं धारणात् सत्यदर्शी।
आयुर्वेदे प्रभौमे समयमनुसरन् विश्वदृष्टिं च कर्षन्
कल्याणानां निदानं जगति विजयते रामदेवो यतीन्द्रः ॥

अदृष्टवन्तोऽपि जना मुनीन्द्रं पतञ्जलिं योगनिधिं पुराणम्।
अदृष्टवन्तश्च भवन्तमद्य पश्यन्ति बाबागुरुरामदेवम्॥

जेजयीतु तव शास्त्रपाण्डिती देदिवीतु भुवि कीर्तिवैभवम्।
बोभवीतु गुरुशारदाकृपा तन्तनीतु शरदां शतं वयः ॥

पतञ्जलिविश्वविद्यालये केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयेन समायोजिते अखिलभारतीयशास्त्रोत्सवे
समस्तसंस्कृतविद्वत्परिवारपक्षतः

योगर्षिः श्री स्वामी रामदेव महाराजः

इत्यस्य योगविद्यां प्रति सेवाम् अभिलक्ष्य

भारतीयविद्यावैभवसार्वभौमः

इत्युपाधिना सम्मान्यते।

आचार्यः श्रीनिवासः वरखेडी
कुलपतिः
केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, देहली

२०८१ विक्रमसंवत्सरस्य चैत्रमासस्य कृष्णपक्षस्य सप्तमी
दिनाङ्कः – २१ मार्च २०२५
स्थानम् – पतञ्जलिविश्वविद्यालयः, हरिद्वारम्

योग गुरु बाबा रामदेव जी को केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा अखिल भारतीय शास्त्रोत्सव के समापन समारोह (21 मार्च 2025) में "भारतीय विद्या वैभव सार्वभौम" उपाधि से सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित सम्मान भारतीय विद्या, योग एवं संस्कृत के क्षेत्र में उनके अभूतपूर्व योगदान को मान्यता प्रदान करता है।

समापन : संस्कृत के उज्ज्वल भविष्य की संकल्पना

यह समापन समारोह संस्कृत भाषा एवं संस्कृति के प्रति समर्पण, गौरव एवं भविष्य की दिशा में दृढ़ संकल्प का प्रतीक बना। यह आयोजन न केवल संस्कृत शिक्षण और अनुसंधान को बल प्रदान करता है, बल्कि इसकी जड़ों को और अधिक मजबूत करने का कार्य भी करता है। संस्कृत प्रेमियों की यह सहभागिता दर्शाती है कि संस्कृत केवल अतीत की भाषा नहीं, अपितु भविष्य का आधार भी है।

शास्त्रोत्सवसारसङ्ग्रहः

आचार्यगणेशतिम्मण्णपण्डितः, स्पर्धासंयोजकः

श्री श्रीशसमीरः के एस्

श्री निखिल